कोरोना-काल में रंगमंच का शिक्षण और प्रशिक्षण

प्रो. आशा
हिन्दी विभाग
अदिति महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय
drasha@aditi.du.ac.in

प्रो. अनिल शर्मा
हिन्दी विभाग
ज़ाकिर हुसैन कॉलेज (सांध्य)
दिल्ली विश्वविद्यालय

सारांष

शोध-सार कोरोना महामारी का समय सभी के लिए बहुत बुरा दौर था। जीवन के तमाम क्षेत्रों के समान प्रदर्शनकारी कलाओं और उनसे जुड़े शिक्षण–प्रशिक्षण पर इस काल का नकारात्मक प्रभाव रहा। रंगमंच का शिक्षण और प्रशिक्षण भी इस दुष्प्रभाव से अछूता नहीं रह सका सरंगमंच से जुड़े सभी सरकारी और गैर–सरकारी संस्थानों में प्रशिक्षण की प्रक्रिया बाधित हुई। प्रशिक्षु रंगमंच का व्यावहारिक प्रयोग सीखने से वंचित हो गये। रंगमंच कला से जुड़े कलाकारों के जीवन–यापन का संकट आ पड़ा। अनलॉक होने के बाद स्थितियाँ बहुत मंद गति से सुधरती हुई दिखाई पड़ रही हैं। कोरोना–काल ने रंगमंच के प्रशिक्षण के परम्परागत तरीकों के अलावा नए विकल्पों पर भी विचार करने को विवश कर दिया।

बीज-शब्द : कोरोना–काल, अनलॉक, शिक्षण, प्रशिक्षण, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, रंग–संस्थान, सोशल मीडिया, ऑनलाइन।

कोरोना काल सम्पूर्ण मानव जाति के लिए बहुत ही निराशाजनक था। महामारी के चलते दुनिया–भर के लोगों को अनेक प्रकार की मुश्किलों का सामना करना पड़ा। बहुत–से लोग कोरोना बीमारी से संघर्ष करते हुए असामयिक मौत का शिकार हुए, जो बच गये उन्हें अपने–आपको जिंदा रखने के लिए खासी जद्दोजहद करनी पड़ी। कोरोना महामारी के कारण वैश्विक अर्थव्यवस्था बुरी तरह चरमरा गयी। शिक्षा, उद्योग, कृषि जैसे बहुत सारे क्षेत्रों के साथ कला के क्षेत्र में नकारात्मक प्रभाव पड़ा स शिक्षा–व्यवस्था में भले ही ऑनलाइन माध्यम को अपना लिया गया हो, किन्तु वह काफी हद तक खानापूर्ति जैसी ही लगी, क्लास–रूम शिक्षा का विकल्प नहीं बन पायी सप्रदर्शनकारी कलाओं का शिक्षण–प्रशिक्षण कार्यक्रम भी बुरी तरह प्रभावित हुआ स इन कलाओं से जुड़े कलाकारों के लिए आजीविका का बड़ा संकट पैदा हो गया। देश–भर के सभागार, ऑडिटोरियम–जो कलाओं के प्रदर्शन के मंच थे, लम्बी अवधि तक बंद पड़े रहे। बहुत सारे कलाकारों को कला से समझौता करते हुए, अपनी कला को छोड़कर दूसरे काम करने पड़े, बहुत सारे तनाव का शिकार हो गये स वस्तुतः रंगमंच एक सामूहिक कला

है और कोरोना काल में समूह में रहना मतलब अपना जीवन खतरे में डालना था। अनलॉक होने के बाद भी स्थितियाँ एकदम–से नहीं सुधरीं। रंगमंच के विशेषज्ञ प्रोफेसर सत्यव्रत राउत ने उपरोक्त स्थिति पर विचार करते हुए कहा– "अनलॉक का दौर शुरू तो हो गया है लेकिन रंगमंच पर अभी भी तमाम तरह की पाबंदियां जारी है। ऐसे में कलाकारों के सामने एक बार फिर से रंगमंच को जिंदा करने की चुनौती आ खड़ी हुई हैं। थिएटर करने वाले कई कलाकार अब फिर से दर्शकों की तालियों की गड़गड़ाहट सुनना चाहते हैं। लेकिन कोरोना की गाइडलाइन के कारण ये अभी भी संभव नहीं हो पा रहा है। रोजी–रोटी का संकट रंगमंच करने वाले कई कलाकारों को अब अभिनय छोड़ घर चलाने के लिए दूसरे विकल्प तलाश करने पड़ रहे हैं। कलाकारों का कहना है कि पहले किसी तरह घर का खर्च और अभिनय दोनों हो जाता था, लेकिन कोरोना काल में रंगमंच और थिएटर के कलाकार पूरी तरह से टूट गए हैं।" सामान्य स्थितियाँ शुरू होने के बाद भी, दर्शकों के लिए प्रेक्षागृहों को बहुत बाद में खोला गया, वह भी आधी क्षमता के साथ इसके बावजूद भी दर्शक संतोषजनक संख्या में नहीं आये। कोरोना के कहर के कारण अनेक नाट्यदल टूट गये या फिर बंद हो गये। कोरोना काल में सरकार जनता की मदद के लिए कई योजनाएं लेकर आयी किन्तु उनमें से कोई भी योजना रंगमंच के कलाकारों का भला नहीं कर सकी।

उत्साही रंगकर्मियों ने तकनीक के माध्यम से न केवल रंगमंच को जिलाए रखा बल्कि नए–नए प्रयोग भी किये। इस बीच कुछ रंगकर्मी ऐसे भी रहे जिन्होंने आपदा काल में हिम्मत नहीं हारी और घर में रहकर नयी प्रस्तुतियों की तैयारी करते रहे सकई रंगकर्मियों ने घर में रहते हुए एकल अभिनय की सोशल मीडिया पर लाइव स्ट्रीमिंग की। यू–ट्यूब पर भी अपनी प्रस्तुति को अपलोड किया। नाट्य–प्रेमियों ने भी ऐसे प्रयोगों को खूब पसंद किया। तकनीक के माध्यम से रंगमंच के पारंपरिक रूपों को फिर से जानने–समझने का अवसर दिया। तकनीक के साथ रंगमंच का यह सहयोग कुछ ऐसा बना कि आज लगभग सामान्य परिस्थितियाँ होने के बाद भी फेसबुक जैसे माध्यमों में लाइव प्रदर्शन जैसे कार्यक्रम प्रसारित होते रहते हैं। विकट परिस्थितियों में इसी ऑनलाइन माध्यम ने सोशल मीडिया पर हुई प्रस्तुतियों के दर्शकों की संख्या एकाएक बढ़ा दी। नाट्य–प्रेमी दर्शकों ने इन प्रस्तुतियों का खूब लुत्फ भी उठाया।

किन्तु यह भी सत्य है कि तकनीकी माध्यम रंगमंच का विकल्प कभी नहीं बन सकते। यहाँ रंगकर्मियों को दर्शकों की प्रतिक्रिया और तालियाँ नहीं मिल पाती। सारा नाट्य–व्यापार एकतरफा चलता है। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म तो आभासी छवि है इसमें उस जीवन्तता का अभाव है जो नाटक की प्रस्तुति में कलाकारों के साथ ही दर्शक को भीसतत रूप से मिलती है। "रंगमंच के कलाकारों को डिजिटल प्लेटफॉर्म ने सबसे बड़ी चुनौती दी है। कोरोना वायरस के बाद कई कलाकारों ने अपने थिएटर की प्रस्तुति ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से देना शुरू की, लेकिन कलाकारों को दर्शकों की तालियां ना मिलने की वजह से वह निराश हो गए। कलाकारों का

मानना है कि उनकी रुचि दर्शकों के सामने मंच पर अभिनय करने की रहती है। लेकिन डिजिटल प्लेटफॉर्म के कारण यह सब खत्म होता जा रहा है। लिहाजा अब कलाकारों की भी दिलचस्पी अब रंगमंच में कम होती जा रही है।" वस्तुतः रंगमंच एक ऐसी कला है जिसमें कलाकार और दर्शक प्रस्तुति के माध्यम से एक–दूसरे में ऊर्जा का संचार करते हैं – यह संचार तभी हो पाता है जब वे एक–दुसरे के समक्ष हो। सिनेमा और टेलीविजन में अभिनय की तुलना में रंगमंच के अभिनय में यही मुख्य अंतर है। रंगमंच में सब 'लाइव' होता है सिनेमा और टेलीविजन में रिकार्डिड।

कोरोना से पहले भारत में रंगमंच के प्रशिक्षण संस्थान अत्यंत सक्रियता से अपने दायित्व का निर्वाह कर रहे थे। कोरोना ने इस सक्रियता को काफी हद तक बाधित किया सवस्तुतः कोई भी रंग–प्रशिक्षण संस्थान एक निश्चित समय–सीमा में सुचिंतित प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत आधारभूत ढाँचा उपलब्ध करवाता है जिसमें रंगमंच के विभिन्न पक्षों की जानकारी के साथ अभिनय, निर्देशन आदि में विशेष प्रशिक्षण शामिल है। इस समूची प्रक्रिया में अनेक गतिविधियों का संचालन होता है जो प्रशिक्षुओं की शारीरिक उपस्थिति के बिना असंभव है। "एक संस्थान अभिनेता को मूलभूत आवश्यक कौशलों– स्वर, संभाषण, गति, संगीत एवं अभिनय से सन्न करते हुए साथ ही साथ देश के हर भाग में काम कर रहे विभिन्न अभिनेताओं और निर्देशकों की शैलियों और प्रणालियों के तरीकों से व्यापक विवरण उपलब्ध करा सकता है। " यह पूरी प्रक्रिया एक निश्चित समयावधि में संपन्न की जाती है। पाठ्यक्रम को मुख्य रूप से सैद्धांतिक और व्यावहारिक पक्षों में विभाजित कर लिया जाता है। सैद्धांतिक पक्ष के अंतर्गत प्रशिक्षु रंगमंच के इतिहास और परम्परा,विभिन्न शैलियों, नाट्य–लेखन,नाटकों, नाटककारों, रंगकर्मियों इत्यादि से परिचय करवाया जाता है। व्यावहारिक पक्ष के अंतर्गत नाटक के पढ़े जाने से लेकर उसके मंच पर प्रदर्शित होने की समूची प्रक्रिया को 'करके' दिखाया जाता है और 'करवाया' भी जाता है। "नाट्य–प्रशिक्षण में अभिनय के साथ–साथ रंगमंच से जुड़े हर पहलू को सिखाया जाता है ... रंगमंच पर आने से पहले रंगमंच परे का काम सीखना ज्यादा जरूरी होता है... जिसमें नेपथ्य–निर्माण, वस्त्रसज्जा–निर्माण, प्रकाश–योजना का इस्तेमाल। इसमें भी लाईट, स्पॉट की सारी जानकारी से लेकर उन्हें ऑपरेट करने तक की सीख, रंगभूषा का महत्त्व, समय के हिसाब से संगीत का ज्ञान, प्रॉप्स का चयन और नाटक की बेल देने से नाटक सम्पन्न होने तक का मंच परे का हर काम करना, जानना जरूरी होता है।" वस्तुतः रंगमंच एक प्रकार की प्रबंधन–कला भी है जिसमें हर छोटे–से–छोटे कार्य की महत्वपूर्ण भूमिका होती है सहर कार्य को यहाँ निपुणता से करने का तरीका सिखाया जाता है। जाहिर है, सीखने–सिखाने की यह प्रक्रिया कोरोना के दौर में सहज नहीं रही।

भारत में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय और इसके क्षेत्रीय केंद्र, मध्य प्रदेश नाट्य विद्यालय, भारतेंदु नाट्य अकादमी आदि सरकारी संस्थानों के साथ ही गैर–सरकारी संस्थानों और

नाट्य–संस्थाओं द्वारा रंगमंच का प्रशिक्षण दिया जाता है। कई विश्वविद्यालयों में रंगमंच के विभाग हैं। इन सबमें राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय सर्वोपरि है। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय अपने त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम के अलावा देश के विभिन्न हिस्सों में कार्यशालाओं के माध्यम से भी रंग–प्रशिक्षण को गति देता रहता है। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में प्रशिक्षणकार्यक्रम के "पाठ्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य छात्रों को रंगकर्म अभ्यास के लिए तैयार करना है इसके लिए व्यावहारिक कौशल की विविधता को विकसित करना आवश्यक हैं और साथ ही ज्ञान के संग्रह को संचित करना भी। जबकि अध्याययन के सभी क्षेत्रों को अलग–अलग मूल्याकित किया जाता है और प्रत्येक में उच्च मानक के कार्य की मांग हैं, पाठ्यक्रम का सबसे महत्वंपूर्ण उद्देश्या है ग्रुप की सामूहिक संरचना के अंदर ही सृजनात्मकक कल्पना और इसकी अभिव्यक्ति की अमूर्त संकल्पना का विकास।" अन्य संस्थान भी छमाही, एकवर्षीय, द्विवर्षीय पाठ्यक्रमों के साथ रंगमंच का प्रशिक्षण देने का काम कर रहे हैं। किन्तु कोरोना महामारी के चलते राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय और इसके क्षेत्रीय केंद्र, मध्य प्रदेश नाट्य विद्यालय, भारतेंदु नाट्य अकादमी आदि सरकारी प्रशिक्षण संस्थानों के साथ ही गैर–सरकारी प्रशिक्षण संस्थानों के शैक्षणिक सत्रों में व्यवधान आया। रंगमंच एक प्रायोगिक कला है जिसमें 'करना' मुख्य रहता है लेकिन कोरोना संकट के चलते 'करने' की परिस्थितियाँ बन ही नहीं पा रहीं थीं। ऐसे में, रंगमंच के शिक्षण–प्रशिक्षण संस्थानों ने भी विकल्पों की तलाश की। रिकार्डेड एकल प्रस्तुतियों के माध्यम से प्रशिक्षुओं का मूल्यांकन किया गया। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय द्वारा प्रतिवर्ष ग्रीष्मावकाश के दौरान वयस्कों के लिए थिएटर एप्रीसिएशन कोर्स का आयोजन किया जाता रहा है, कोरोना–काल में यह कार्यक्रम ऑनलाइन किया गया। इसी प्रकार संस्कार रंग टोली के अंतर्गत ग्रीष्म कार्यशालाएँ आयोजित करने का सिलसिला भी ऑनलाइन माध्यम से ही संपन्न हुआ सहालाँकि इस समूची प्रक्रिया में प्रशिक्षु वह अर्जित नहीं कर पाए जिसके वे हकदार थे।

कोरोना काल का भयावह समय रंगमंच के शिक्षण और प्रशिक्षण से जुड़ी गतिविधियों को पूरी तरह रोक तो नहीं पाया। गति बहुत धीमी जरूर हुई किन्तु रुकी नहीं। धीरे–धीरे उबरने की कोशिश हो रही है। "रानावि रंगमंडल ने भी रविन्द्र त्रिपाठी द्वारा लिखित और सुरेश शर्मा निर्देशित नाटक 'पहला सत्याग्रही' का फिर से मंचन किया इसके लिए मुक्ताकाशी रंग स्थल बनाया गयास रंगमंडल के अभिनेताओं का परीक्षण कराया गया और पूर्वाभ्यास के लिए सभी अभिनेताओं को एक साथ केवल सप्ताह में दो दिन बुलाया गया और बाकी दिनों में एक अभिनेता को एक दिन का अंतर रख कर पूर्वाभ्यास में बुलाया जाता थास मंच पर भी शारीरिक दूरी का पालन हो इसलिए मंच का आकार बढ़ाया गया है। एक प्रस्तुति के लिए अधिकतम दर्शकों की संख्या केवल सौ रखी गयी है। प्रस्तुति को देखने के लिए ठीक ठाक संख्या में दर्शक पहुंचेस" धीरे–धीरे रंगमंच–केन्द्रों में हलचल शुरू हुई है, लेकिन अभी तक वह बात नहीं बन पाई है जो कोरोना से पहले थी।

रंगमंच को प्रयोगात्मक विज्ञान कहा जाता है। विज्ञान का कोई भी प्रयोग तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक उसे सफलतापूर्वक किया न जाय स यही स्थिति रंगमंच की भी है। कोरोना महामारी के चलते रंगमंच के प्रशिक्षण संस्थानों में 'करने' की प्रक्रिया बाधित हुई जिसका सीधा और नकारात्मक असर प्रशिक्षुओं की प्रतिभा पर पड़ा सरंगमंच की जिस तकनीक और उसके व्यावहारिक पक्ष को वह शारीरिक रूप से परिसर में उपस्थित रहकर सीख पाता उससे वह वंचित हो गया। रंगमंच की अनेक क्रियाएँ सामूहिक गतिविधि का अंग हैं जो इस दौरान नहीं हो पायी। मंच पर स्पेस, प्रकाश, ध्वनियों का कल्पनाशील इस्तेमाल, दृश्य–परिकल्पना का साकार रूप, आशु–अभिनयदृ आदि प्रशिक्षण–प्रक्रिया के अपरिहार्य अंग हैं, जो संभव ही नहीं हो पाए। वाचिक पक्ष के लिए हम कह सकते हैं कि उसका अभ्यास एकांत में भी किया जा रहा है, किन्तु उसके भी मूल्यांकन की प्रक्रिया में बाधा आई। रिकार्डिड आवाज क्या नैसर्गिक रह पाती है ? मूल्यांकन के दौरान जो संशोधन–सुझाव दिये जाते हैं, वे संभव नहीं हो पाये स"इस बात पर भी सोचने की जरूरत है कि आभासी माध्यम में रंग प्रशिक्षण के पीछे कोई सुचिंतित दृष्टि है या इसमें परंपरा से चली आ रही चीजों को ही मशीनी ढंग से पढ़ाना जारी रहेगा। प्रशिक्षु स्नातकों को नई दुनिया और उस दुनिया में रचे जा सकने वाले रंगमंच के लिए तैयार करने पर कोई विचार हो रहा है? इससे कोई शायद ही इनकार करेगा कि भविष्य में कोरोना पूर्व काल की दुनिया जैसी यथा स्थिति बहाल नहीं होगी। तो रंगमंच को और रंग प्रशिक्षण को भी आभासी और भौतिक दुनिया के साथ तालमेल बैठाना होगा। लेकिन यह सामाजिकता और जीवंतता जैसे गुणों को त्याग भी नहीं सकती। रंगमंच के अध्यापकों को भविष्य के लिए उपयोगी शिक्षण पद्धति पर छात्रों के साथ मिल बैठ कर विचार करना होगा। रानावि जैसी संस्था जिसके पास आर्थिक और भौतिक संसाधन हैं को दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ अपने छात्रों को विश्वास में लेते हुए वर्तमान दौर में रंग प्रशिक्षण का रास्ता निकालना चाहिए। यह ध्यान रखते हुए कि रंगमंच समूह में रह कर अभ्यास करते हुए सीखने वाली विधा है। " कोरोना जैसी विकट परिस्थिति नें रंग–प्रशिक्षण की वर्तमान पद्धति पर प्रश्नचिन्ह लगाते हुए नए रास्तों की तलाश की पहल शुरू तो की ही है।

रंगमंच के पारंपरिक रूपों और लोक–नाट्यों से जुड़े कलाकारों के लिए भी कोरोना काल आजीविका का संकट लेकर आयास लोक कलाकारों को सरकारी और गैर सरकारी संस्थाएं आयोजनों में आमंत्रित कर लिया करती थी जिनसे मिलने वाले मानदेय से लोक कलाकारों की गुजर–बसर हो जाती थी किन्तु कोरोना काल में यह श्रृंखला टूट गयी। ऐसे बहुत से लोक कलाकारों को अपनी पारम्परिक कला को छोड़कर खेतों में मजदूरी करने, रिक्शा चलाने जैसे काम करने पड़ेस"मन्नालाल गंधर्व (62) कई क्षेत्रीय और राष्ट्रीय नाटक में काम कर चुके हैं। अभी वे भोपाल में नया थियेटर से जुड़े हैं। उन्हें 'धन का घमंड' में अच्छे अभिनय के लिए ''बिलासा सम्मान'' भी मिल चुका है, इसके अलावा वे चरणदास चोर, सड़क, राजरक्त, आगरा

बाजार, लाहौर, झूठी माया, घर की लाज जैसे कई नाटकों में काम कर चुके हैं। लेकिन लॉकडाउन में रिक्शा चलाकर जीवनयापन करने को मजबूर हैं।" भारत के गाँव–देहात में बहुत सारे लोग मुखौटा–निर्माण, कठपुतली–निर्माण और इनके प्रदर्शन से जुड़े हैं, कोरोना–काल में इन कलाओं से जुड़ी गतिविधियाँ लगभग शून्यता की स्थिति में में चली गयी थीं।

रंगमंच के शिक्षण और प्रशिक्षण का एक महत्वपूर्ण आयाम देश–भर के विश्वविद्यालयों में चलने वाली रंगमंच संबंधी गतिविधियाँ और कार्यक्रमों से भी जुड़ा है। इसे हम 'कैम्पस थिएटर' भी कहते हैं। 'कैम्पस थिएटर' के अंतर्गत अकादमिक पाठ्यक्रम के अंतर्गत नाटक के अध्ययन–अध्यापन से जुड़ी गतिविधियों के साथ ही नुक्कड़ नाटकों और पूर्ण कालिक नाटकों की प्रस्तुतियाँ की जाती हैं। इनमें ऊर्जा से भरपूर युवा विद्यार्थी जोश और उत्साह के साथ भागीदारी करते हैं। विद्यार्थी नाट्य–प्रस्तुति देख भी सकें, इसके प्रबंध भी किये जाते हैं। वस्तुतः विश्वविद्यालयों में ये गतिविधियाँ विद्यार्थियों की छुपी हुई प्रतिभा को सही दिशा में निर्देशित करने का काम करती हैं। मंच पर दर्शकों के सम्मुख अभिनय करने से उनके व्यक्तित्व में आत्मविश्वास बढ़ता है। किन्तु पिछले ढाई साल से इन रंगमंचीय क्रियाकलापों पर पूर्ण विराम सा लग गया है सकोरोना के कारण अध्ययन–अध्यापन ऑनलाइन माध्यम से चला, जहाँ इस प्रकार की गतिविधियों की गुंजाइश ही नहीं बची।

उपरोक्त समस्त विवेचन के उपरान्त यही निष्कर्ष निकलकर आता है कि कोरोना–काल में रंगमंच का शिक्षा और प्रशिक्षण नकारात्मक रूप से प्रभावित हुआ। इस दौर में विद्यार्थी को उनका 'अपेक्षित' देने में ऑनलाइन माध्यम कारगर साबित नहीं हुआ। ऑनलाइन माध्यमों से रंगमंच की जितनी भी गतिविधियाँ हुई वे शौकिया तौर पर तो ठीक रहीं किन्तु सीखने–सिखाने की दिशा में वे महज खानापूर्ति ही सिद्ध हुईं।

References:

- https://ghoomtaaina.in/discussion-on-challanges-before-theatre-artists-during-this-corona-crisis-period-by-prof-satyavrat-rout/
- https://ghoomtaaina.in/discussion-on-challanges-before-theatre-artists-during-this-corona-crisis-period-by-prof-satyavrat-rout/
- जैन कीर्ति, 'भारत में रंग प्रशिक्षण',रंग प्रसंग–51, पृष्ठ–11, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय
- डॉ. मिलिंद इनामदार, 'अभिनय के औपचारिक प्रशिक्षण की जरूरत',रंग प्रसंग–51, पृष्ठ–143, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय
- https://nsd.gov.in/hindi/index.php/courses/
- https://rangwimarsh.blogspot.com/2020/10/blog-post.html
- https://rangwimarsh.blogspot.com/2021_07_06_archive.html
- https://www.humsamvet.com/photo-feature/amid-lockdown-theatre-artist-facing-livelihood-problem-4211